फ़ासीवाद

की

सरल हिंदी व्याख्या

प्रोफ़ेसर डॉ ऋषि आचार्य

फ़ासीवाद: कही हम भी इसके शिकार तो नहीं ?

फासीवाद या फ़ासिस्टवाद (फ़ासिज़्म) इटली में बेनितो मुसोलिनी द्वारा संगठित "फ़ासिओ डि कंबैटिमेंटो" का राजनीतिक आंदोलन था जो मार्च, 1919 में प्रारंभ हुआ। इसकी प्रेरणा और नाम सिसिली के 19वीं सदी के क्रांतिकारियों- "फासेज़"-से ग्रहण किए गए। मूल रूप में यह आंदोलन समाजवाद या साम्यवाद के विरुद्ध नहीं, अपितु उदारतावाद के विरुद्ध था।

उद्भव तथा विकास

यूँ तो फासीवादी दर्शन के बीज १९१४ में ही पड़ चुके थे और 1919 के आते आते ईटली के राष्ट्रीय फ़ासिस्ट पार्टी के नेता बेनिटो मुसोलिनी ने इसकी जड़े देश भर में फैलाना शुरू कर दिया| प्रथम विश्वयुद्ध में

भाग लेने के बाद ईटली का आर्थिक और सामाजिक ढाँचा बेहद चरमरा रहा था और लोगों में तत्कालीन उदारवादी सरकार के खिलाफ एक असंतोष भी था| मुसोलिनी ने अपने सिद्धातों को फैलाने का यही ठीक अवसर समझा|
मुसोलिनी ने अपने कुछ क्रांतिकारी साथियों के साथ एक नई क्रांति की भूमिका बना डाली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इटली को सम्मानित स्थान, गृहनीति में मजदूरों और सेना का सम्मान तथा सभी लोकतांत्रिक और संसदीय दलों तथा पद्धतियों का दमन आदि उसके घोषणापत्र की प्रमुख बातें थीं। मुसोलिनी ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए रोसोनी की नेशनल सिंडिकैलिस्ट पार्टी को भी मिला लिया। क्रांति और पुनरुत्थान के तीखे नारों ने निर्धन जनता को बहुत प्रभावित किया और बहुसंख्यक कृषकों तथा मजदूरों में फ़ासिस्टवाद की जड़ें, बड़ी गहराई तक फैल गईं। सिंडिकैलिस्ट पार्टी तब तक कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में उभर चुकी थी, उसे भी मुसोलिनी के क्रूर दमन का शिकार होना पड़ा।

यूँ फासिस्टों का एक मात्र लक्ष्य कम्युनिस्टों की सरकार को उखाड़ फैकना ही था और इनसे निपटने के दौरान अनेक भिन्न-भिन्न मनोवृत्तियों के तत्व इस आंदोलन में सम्मिलित हुए, जिसके कारण फ़ासिस्टों का कोई संतुलित राजनीतिक दर्शन नहीं बन पाया। कुछ व्यक्तियों की सनकों और प्रतिक्रियावादी दुराग्रहों से ग्रस्त इस आंदोलन को इटली की तत्कालीन अनिश्चय और अराजकता की परिस्थितियों से बहुत पोषण मिला।

अंततोगत्वा 20 अक्टूबर 1922 को काली कमीज़ें पहने हुए फ़ासिस्टों ने रोम को घेर लिया तो सम्राट् विक्टर इमैनुएल को विवश होकर मुसोलिनी को मंत्रिमंडल बनाने की स्वीकृत देनी पड़ी। फ़ासिस्टों ने

इटली के संविधान में अनेक परिवर्तन किए। ये परिवर्तन, पार्टी और राष्ट्र दोनों को मुसोलिनी के अधिनायकवाद में जकड़ते चले गए। फ़ासिस्टों का यह निरंकुशतंत्र द्वितीय विश्वयुद्ध तक चला। इस बार मुसोलिनी के नेतृत्व में इटली ने "धुरी राष्ट्रों" का साथ दिया। जुलाई, 1943 में "मित्रराष्ट्रों" ने इटली पर आक्रमण कर दिया। फ़ासिस्टों का भाग्यचक्र बड़ी तेजी से उलटकर घूम गया।
पार्टी की सर्वोच्च समिति के आक्रोशपूर्ण आग्रह पर मुसोलिनी को त्यागपत्र देना पड़ा और फ़ासिस्ट सरकार का पतन हो गया।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अपने आरंभिक दिनों में फ़ासिस्टवादी आंदोलन का ध्येय राष्ट्र की एकता और शक्ति में वृद्धि करना था। 1919 और 1922 के बीच इटली के कानून और व्यवस्था को चुनौती सिंडिकैलिस्ट, कम्युनिस्ट तथा अन्य वामपंथी पार्टियों द्वारा दी जा रही थी। उस समय फ़ासिस्टवाद एक प्रतिक्रियावादी और प्रतिक्रांतिवादी आंदोलन को समझा जाता था। स्पेन, जर्मनी आदि में भी इसी प्रकृति के आंदोलनों ने जन्म लिया और फ़ासिस्टवाद, साम्यवाद के प्रतिपक्ष (एंटीथीसिस) के अर्थ में लिया जाने लगा। 1935 के पश्चात् हिटलर-मुसोलिनी-संधि से इसके अर्थ में अतिक्रमण और साम्राज्यवाद भी जुड़ गए। युद्ध के दौरान मित्रराष्ट्रों ने फ़ासिज्म को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बदनाम कर दिया।

मुसोलिनी की प्रिय उक्ति थी : 'फ़ासिज्म निर्यात की वस्तु नहीं है'। फिर भी, अनेक देशों में, जहाँ समाजवाद और संसदीय लोकतंत्र के विरुद्ध कुछ तत्व सक्रिय थे, यह आदर्श के रूप में ग्रहण किया गया। इंग्लैंड में "ब्रिटिश यूनियन आव फ़ासिस्ट्स" और फ्रांस में "एक्शन फ्रांकाइसे" द्वारा इसकी नीतियों का अनुकरण किया गया। जर्मनी

(नात्सी), स्पेन (फैलंगैलिज़्म) और दक्षिण अमरीका में इसके सफल प्रयोग हुए। हिटलर तो फ़ासिज्म का कर्ता ही था। नात्सीवाद के अभ्युदय के पूर्व स्पेन के रिवेरा और आस्ट्रिया के डालफ़स को मुसोलिनी का पूरा सहयोग प्राप्त था। सितंबर, 1937 में "बर्लिन-रोम धुरी" बनने के बाद जर्मनी ने फ़ासिस्टवादी आंदोलन की गति को बहुत तेज किया। लेकिन 1940 के बाद अफ्रीका, रूस और बाल्कन राज्यों में इटली की लगातार सैनिक पराजय ने फ़ासिस्टवादी राजनीति को खोखला सिद्ध कर दिया। जुलाई, 1943 का सिसली पर ऐंग्लो-अमरीकी-आक्रमण फ़ासिस्टवाद पर अंतिम और अंतकारी प्रहार था।

कैसे पहचाने फ़ासीवाद को :- (साभार samajvad.wordpress.com)

(चित्र साभार - firkee.in)

डा. लॉरेंस ब्रिट – एक राजनीतिक विज्ञानी जिन्होंने फासीवादी शासनों जैसे हिटलर (जर्मनी), मुसोलिनी (इटली) फ्रेंको (स्पेन), सुहार्तो (इंडोनेशिया), और पिनोचेट (चिली) का अध्ययन किया और निम्नलिखित 14 लक्षणों की निशानदेही की है;

1. शक्तिशाली और सतत राष्ट्रवाद — फासिस्ट शासन देश भक्ति के आदर्श वाक्यों, गीतों, नारों , प्रतीकों और अन्य सामग्री का निरंतर उपयोग करते हैं. हर जगह झंडे दिखाई देते हैं जैसे वस्त्रों पर झंडों के प्रतीक और सार्वजनिक स्थानों पर झंडों की भरमार. (टिप्पणी - इन झंडो का उपयोग आम जनमानस के दिलों में बैठी राष्ट्रवादिता को भुनाने के लिए किया जाता है, वाक्य और प्रतिक जनभावनाओं को अपनी तरफ आकर्षित करते है)

2. मानव अधिकारों के मान्यता प्रति तिरस्कार — क्योंकि दुश्मनों से डर है इसलिए फासिस्ट शासनों द्वारा लोगो को लुभाया जाता है कि यह सब सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए वक्त की ज़रुरत है. शासकों के दृष्टिकोण से लोग घटनाक्रम को देखना शुरू कर देते हैं और यहाँ तक कि वे अत्याचार, हत्याओं, और आनन-फानन में सुनाई गयी कैदियों को लम्बी सजाओं का अनुमोदन करना भी शुरू कर देते हैं. (टिप्पणी - इससे पहले की लोग कुछ सोचें समझे - फासीवादी अपना काम कर गुजरते है और फिर उसके कारण को धार्मिक या राष्ट्रिय उत्तेजना का रंग दे देते है, मुसोलिनी और हिटलर दोनों ही इस निति का उपयोग करने में माहिर थे)

3. दुश्मन या गद्दार की पहचान एक एकीकृत कार्य बन जाता है — लोग कथित आम खतरे और दुश्मन – उदारवादी; कम्युनिस्टों, समाजवादियों, आतंकवादियों, आदि के खात्मे की ज़रुरत प्रति उन्मांद की हद तक एकीकृत किए जाते हैं.

(टिप्पणी - सभी फासीवादी आपको एकजुट करेंगे इस नाम पर की विरोधी ताकतों को आपके माध्यम से समाप्त करना आपकी जिम्मेदारी और उनका लक्ष्य है)

4. मिलिट्री का वर्चस्व — बेशक व्यापक घरेलू समस्याएं होती हैं पर सरकार सेना का विषम फंडिंग पोषण करती है. घरेलू एजेंडे की उपेक्षा की जाती है ताकि मिलट्री और सैनिकों का हौंसला बुलंद और ग्लैमरपूर्ण बना रहे.

5. उग्र लिंग-विभेदीकरण — फासिस्ट राष्ट्रों की सरकारें लगभग पुरुष प्रभुत्व वाली होती हैं. फासीवादी शासनों के अधीन, पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को और अधिक कठोर बना दिया जाता है. गर्भपात का सख्त विरोध होता है और कानून और राष्ट्रीय नीति होमोफोबिया और गे विरोधी होती है (टिप्पणी - तत्कालीन मुख्य धार्मिक बहुमत को भुनाने के लिए उस धर्म के नियम मान्यताएँ और प्रतीकों को अचानक से बहुत समर्थन दे दिया जाता है)

6. नियंत्रित मास मीडिया – कभी कभी तो मीडिया सीधे सरकार द्वारा नियंत्रित किया जाता है, लेकिन अन्य मामलों में, परोक्ष सरकार विनियमन, या प्रवक्ताओं और अधिकारियों द्वारा पैदा की गयी सहानुभूति द्वारा मीडिया को नियंत्रित किया जाता है. सामान्य युद्धकालीन सेंसरशिप विशेष रूप से होती है. (टिप्पणी - मिडिया को सत्य दिखाने नहीं दिया जाता बल्कि जो दिखाना हो उस असत्य को भी सत्य बनाकर प्रस्तुत करा जाता है)

7. राष्ट्रीय सुरक्षा का जुनून – एक प्रेरक उपकरण के रूप में सरकार द्वारा इस डर का जनता पर प्रयोग किया जाता है.

8.धर्म और सरकार का अपवित्र गठबंधन — फासिस्ट देशों में सरकारें एक उपकरण के रूप में सबसे आम धर्म को आम राय में हेरफेर करने के लिए प्रयोग करती हैं. सरकारी नेताओं द्वारा धार्मिक शब्दाडंबर और शब्दावली का प्रयोग सरेआम होता है बेशक धर्म के प्रमुख सिद्धांत सरकार और सरकारी कार्रवाईयों के विरुद्ध होते हैं. (टिप्पणी : लेनिन ने बहुत पहले बताया था कि फासीवाद और प्रतिक्रियावाद दस में से नौ बार जातीयतावादी, नस्लवादी, साम्प्रदायिकतावादी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का चोला पहनकर आता है।)

9. कारपोरेट पावर संरक्षित होती है – फासीवादी राष्ट्र में औद्योगिक और व्यवसायिक शिष्टजन सरकारी नेताओं को शक्ति से नवाजते हैं जिससे अभिजात वर्ग और सरकार में एक पारस्परिक रूप से लाभप्रद रिश्ते की स्थापना होती है.(टिप्पणी - ये मिलीभगत जनता को मुर्ख बनाने के और आभासी विकास का हवाई किला दिखाने के बहुत काम आती है)

10. श्रम शक्ति को दबाया जाता है – श्रम-संगठनों का पूर्ण रूप से उन्मूलन कर दिया जाता है या कठोरता से दबा दिया जाता है क्योंकि फासिस्ट सरकार के लिए एक संगठित श्रम-शक्ति ही वास्तविक खतरा होती है.

11. बुद्धिजीवियों और कला प्रति तिरस्कार – फासीवादी राष्ट्र उच्च शिक्षा और अकादमिया के प्रति दुश्मनी को बढ़ावा देते हैं. अकादमिया और प्रोफेसरों को सेंसर करना और यहाँ तक कि गिरफ्तार करना असामान्य नहीं होता. कला में स्वतन्त्र अभिव्यक्ति पर खुले आक्रमण किए जाते हैं और सरकार कला की फंडिंग करने से प्राय: इंकार कर देती है.

12. अपराध और सजा प्रति जुनून – फासिस्ट सरकारों के अधीन कानून लागू करने के लिए पुलिस को लगभग असीमित अधिकार दिए जाते हैं. पुलिस ज्यादितियों के प्रति लोग प्राय: निरपेक्ष होते हैं यहाँ तक कि वे सिविल आज़ादी तक को देशभक्ति के नाम पर कुर्बान कर देते हैं. फासिस्ट राष्ट्रों में अक्सर असीमित शक्ति वाले विशेष पुलिस बल होते हैं.

13. उग्र भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार — फासिस्ट राष्ट्रों का राज्य संचालन मित्रों के समूह द्वारा किया जाता है जो अक्सर एक दूसरे को सरकारी ओहदों पर नियुक्त करते हैं और एक दूसरे को जवाबदेही से बचाने के लिए सरकारी शक्ति और प्राधिकार का प्रयोग किया जाता है. सरकारी नेताओं द्वारा राष्ट्रीय संसाधनों और खजाने को लूटना असामान्य बात नहीं होती.

14.चुनाव महज धोखाधड़ी होते हैं — कभी-कभी होने वाले चुनाव महज दिखावा होते हैं. विरोधियों के विरुद्ध लाँछनात्मक अभियान चलाए जाते है और कई बार हत्या तक कर दी जाती है , विधानपालिका के अधिकारक्षेत्र का प्रयोग वोटिंग संख्या या

राजनीतिक जिला सीमाओं को नियंत्रण करने के लिए और मीडिया का दुरूपयोग करने के लिए किया जाता है.

मित्रों डॉ ब्रिट ने इन 14 लक्षणों में आपको वो कसौटियाँ दी है जिनके माध्यम से आप अपने आसपास चल रहे फासीवाद को ठीक ठीक पहचान सकते है|

जहाँ फ़ासीवाद अपने सारे कुचक्रों के साथ बड़ा भयानक और दुर्दमनीय प्रतीत होता है पर उसे हराना इतना भी मुश्किल नहीं है - फ़ासीवाद को मात देने के कुछ तरीके हम अपने मित्रों के लिए यहाँ दे रहे है लेकिन सबसे बड़ा तरीका है - “वैज्ञानिकता और मानवतावाद का प्रचार , प्रसार)”

फ़ासीवाद अगर किसी से सबसे ज्यादा डरता है तो वह है - आम आदमी की खुली सोच से|

इससे निपटने के कुछ आसान तरीके इस प्रकार है -

१. व्यापक स्तर पर छात्र शक्ति से संपर्क करके उनके सामने फासीवादी ताकतों को बे-नकाब करना|
२. तर्क को बढ़ावा देना, विचार मंचों , गोष्ठियों और चिंतन शिविरों का आयोजन करना और समाज के बुद्धिवादी वर्ग को आमंत्रित करना
३. मजदूरों और शोषित वर्गों को इस बारे में शिक्षित करना और उन्हें अपना हक़ प्राप्त करने के सभी संभव उपाय बताना

४. फासीवादी कार्यक्रमों को सोशल मीड़ियाँ पर बेनकाब करना और जनजागरूकता बढ़ाना|
५. पीड़ित वर्ग की यूनियनों को मजबूत करना और क़ानून का सहारा लेना|
६. जागरूकता सबंधी पोस्ट, नारे , स्टिकर आदि वितरित करना|

याद रखे हमें किसी भी प्रकार के फासीवादी लालच में नहीं फसना है और अपनी निजी मान्यताओं को राष्ट्रभर में या विश्वभर में लागु करने वाले सिद्धांत से खुद को बचाना है|

जय विज्ञान- जय मानवता

(इस लेख को तैयार करने में मुख्य रूप से हिंदी विकिपीडीयाँ, समाजवाद.वर्डप्रेस.कॉम और मजदूर बिगुल के लेखों का योगदान लिया गया है, सभी चित्र इंटरनेट से लिए गए है)